Notification No. : 550/2023

Date of : 12-12-2023

Name of the Scholar : Avinish Prakash Singh
Name of the Supervisor : Prof.Durga Prasad Gupt
Name of the Department: Hindi
Topic of research : Ashok Vajpeyi Ke Sahitya Mein Nihit Sanskriti Ki Srijanatmakata aur Chintan Ka Adhyayan

Keywords: Sanskriti Ki Srijanatmakata, Kalayen, Prati Samay, Satta Ka Virodh, Bhasha Aur Sanskriti

शोध-स्थापनाएँ

साहित्य और कलाएँ मूलतः और स्वभावतः सत्ता विरोधी होती हैं :

आरंभ से ही सत्ता का एकमात्र उद्देश्य शक्ति-संकेंद्रण रहा है ताकि वो सत्ता में बनी रहे। इसके लिए सभी समय के सभी सत्ता-रूपों ने आम जनता से शक्ति सोखने का कार्य किया है। साहित्य और कलाएँ शक्ति सोखने के इस अन्याय के ख़िलाफ़ हैं। प्रत्येक व्यक्ति तक को उसकी गरिमामयी शक्ति के पूर्णतः विकेंद्रीकरण का लक्ष्य लेकर चलते हुए साहित्य और कलाएँ सत्ता विरोधी ठहरती हैं।

साहित्य और कलाएँ प्रति-समय रचतीं हैं:

हम जिस समय में जी रहे हैं उसका अधिकांश हिस्सा सत्ता द्वारा रचा गया है। सत्ता द्वारा रचे गए आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक ढाँचे में मनुष्य की पक्षधरता की कोई जगह नहीं है। साहित्य और कलाएँ अपनी स्वतंत्र जिजीविषा से इस दिए गए बेजा समय के बरक्स एक नया, दूसरा समय समय रचती हैं।

संस्कृति सृजनात्मक होती है :

दुनिया की उम्र में एक सुदीर्ध वक्त गुज़र चुकने से आज के नए वक़्त में नई तरह की जरूरतों ने जो 'अभूतपूर्व संकट' पैदा किए हैं उनका हल अतीत के 'परंपरागत वैचारिक औज़ारों' से संभव नहीं हो पाता। इस 'अभूतपूर्व संकटों' से निदान के लिए एक अभूतपूर्व समाधान' की आवश्यकता होती है। अवधेय है कि ये अभूतपूर्व समाधान' ही किसी संस्कृति की सृजनात्मकता' है।

हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति 'अध्याहार' की बजाय 'समाहार' पर आधारित हैं:

संस्कृत व्याकरण में रूप-सिद्धि के दौरान दो शब्द 'अध्याहार' और 'समाहार' का महत्वपूर्ण प्रयोग होता है। अध्याहार के तहत किसी अन्य नए वर्ण या शब्द के आगमन पर, उसको जगह देने के लिए पहले से

मौजूद किसी अक्षर के लोप को दर्शाया जाता है। जबकि, समाहार के तहत - यदि कोई नया शब्द या वर्ण आता भी है तो, पहले से स्थापित पुराने किसी भी वर्ण या शब्द को हटाने या मिटाने की ज़रूरत नहीं होती, बल्कि नया और पुराना शब्द दोनों ही समरसता से अर्थवान होते हैं। ठीक यही स्थिति हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति की है। हिंदी भी; अपनी जड़ता को अस्वीकार करते हुए बीस से ज़्यादा बोलियों के मध्य पुल का काम करती है। हिंदी वस्तुतः विभिन्न बोलियों का एक पुष्पगुच्छ है।

भाषा और संस्कृति परस्पर निर्भर और पूरक हैं:

यदि हमें किसी भाषा को सीखना है तो हमें वह भाषा तब तक सटीक रूप से समझ नहीं आएगी जब तक कि हम उस भाषा से संबंधित संस्कृति में निहित 'प्रतीकों' को नहीं समझ लेते हैं। प्रतीक किसी भी संस्कृति में परम्परागत रूप से विकसित होते हैं। इन प्रतीकों में सालों-सदियों की अनुगूँज होती है। ये अनुगूँजें मुहावरों, लोकोक्तियों के माध्यम से ही भाषा में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। साफ़ कि, भाषा को समझना दरअसल सांस्कृतिक प्रतीकों को समझना हैं। वह 'भाषा' ही है जो सांस्कृतिक मूल्यों के रूपांतर और विकास को आवाज़ देती है। वस्तुतः जब भी कोई भाषा विलुप्त होती है तब-तब संस्कृति का एक बड़ा हिस्सा भी साथ में विलुप्त हो जाता है।

साहित्य और कलाओं में अनास्था से दक्षिण एशिया में कट्टरता बढ़ रही है :

दक्षिण एशिया के देश संस्कृति के विषम संकट से गुज़रे हैं और अभी भी गुज़र रहे हैं। कट्टरता बढ़ रही है। संकीर्णता को व्यापक जन समर्थन मिला हुआ है। एक मानी हुई बात यह है कि दक्षिण एशिया के लगभग सभी देशों ने पिछले एक हज़ार सालों की जीवन पद्धति में विज्ञान का तिरस्कार किया है और धर्मों की तर्कहीन व्यवस्था की जड़ता को अत्यधिक स्वीकार किया है। जब हम किसी क्षेत्र में पिछड़ जाते हैं तो सबसे सरल रास्ता यही बचता है कि अगड़ों का 'अनुगमन' किया जाए। ठीक यही स्थिति, दक्षिण एशिया के देशों में भी हुई। दक्षिण एशिया के देश; अपनी संस्कृति-सभ्यता की कमजोरियों का जवाब कट्टरता से देते हैं। और जहाँ कट्टरता से नहीं दे पाते हैं वहाँ उनका 'अनुगमन' करते हैं। ये दोनों स्थितियाँ ही ख़राब है। पहली स्थिति में कट्टरता संकीर्णता है, तो दूसरी स्थिति में पिछलग्गूपन है। वस्तुतः यही कट्टरता और पिछलग्गूपन आज भी भारत में व्याप्त है।